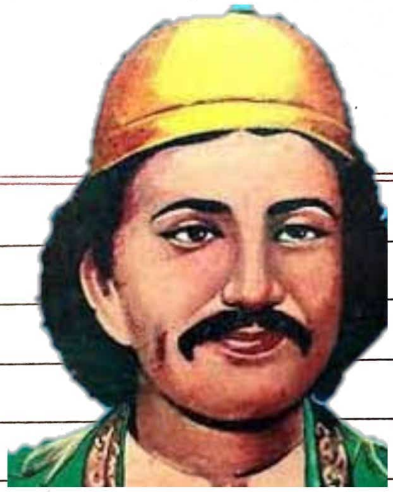

भारतेंदु हरिश्चंद्र

साहित्यिक परिचय

साहित्यिक परिचय :-

आधुनिक हिंदी गद्य के जनक माने जाने वाले भारतेंदु हरिश्चंद जी का जन्म 9 सितम्बर सन् 1850 ई॰ को काशी के प्रसिद्ध वैश्य परिवार में हुआ था। पिता का नाम गोपालचंद गिरिधरदास तथा माता का नाम पार्वती देवी था।

13 वर्ष की अल्पायु में इनका विवाह मन्नो देवी के साथ हो गया।

वृहत् साहित्यिक योगदान के कारण 1857 ई॰ से लेकर 1900 ई॰ तक के युग को भारतेंदु युग के नाम से जाना जाता है।

उन्होंने 1868 ई॰ में 'कविवचन सुधा' 1873 ई॰ में हरिश्चंद मैगजीन 1874 ई॰ में बाला बोधिनी - नामक पत्रिकाएँ निकाली।

उन्होंने 'तदीय समाज' की स्थापना की। इस प्रकार भारतेंदु हरिश्चंद एक सफल नाटककार, प्रतिष्ठित सम्पादक एवं कुशल लेखक के रुप में हिंदी साहित्य संसार के समक्ष प्रकट हुए।

प्रमुख कृतियाँ :—

भारतेंदु हरिश्चंद जी द्वारा रचित प्रमुख कृतियाँ इस प्रकार हैं :—

- मौलिक नाटक :— वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति, सत्य हरिश्चंद, श्री चंद्रावली, विषस्य-विषमौषधम्, अंधेर नगरी इत्यादि।
- अनूदित नाटक :— विद्या सुंदर, पाखण्ड-विडम्बन, धनंजय विजय, कर्पूर मंजरी।
- निबंध संग्रह :— नाटक, कालचक्र, लेवी प्राण लेवी, भारवर्षोन्नति कैसे हो सकती है?, कश्मीर कुसुम।
- आत्मकथा :— एक कहानी : कुछ आप बीती, कुछ जग बीती।
- काव्य कृतियाँ :— प्रेम माधुरी, प्रेम मालिका, प्रेम प्रलाप, नए जमाने की मुकरी, वर्षा विनोद इत्यादि।